स्त्री विमर्श: प्रमुख महिला साहित्यकार

डॉ. समीक्षा व्यास

शोध सार :

स्त्री-विमर्श लेखन का महत्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में मानव समाज को परिचय देना और जीवन के उन अंधेरे कोनों पर भी प्रकाश डालना है, जिसकी पीड़ा स्त्रियों ने सदियों से झेली है। जरूरत है स्त्री अपनी मानवीय गरिमा और अधिकार को समझकर संरचनात्मक, सांस्कृतिक, मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्वों का विश्लेषण करें तथा उन तमाम स्त्रियों को शक्ति दें जो संघर्षरत है तथा जो स्त्री समाज के विकास में सक्रिय है वे जो समाज की नजरों से दूर कहीं किसी कोने में सुबक रही है, जिसके पास मानवीय गरिमा के नाम पर केवल अपना शरीर है, उनको भी शब्द प्रदान करें, जीवन जीने की प्रेरणा दें और साहित्य के नए दृष्टिकोण तथा वैकल्पिक अवधारणाओं को विभाजित करें।

अपने इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महिलाएँ उपन्यास लेखन के क्षेत्र में आई। उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की स्थिति का चित्रण करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने नारी की मन:स्थिति को जिस विशिष्टता से पहचाना है और जिस सुदृढ़ता से उनकी अभिव्यक्ति की है, वह प्रशंसनीय है।

स्त्री विमर्श : प्रमुख महिला साहित्यकार

वैदिक युग से लेकर महाकाव्यों तक नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य और अधिकारों का विशुद्ध वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन संभवत: संसार के किसी भी धर्म ग्रंथ में नहीं है। वैदिक काल से ही नारी को पुरूषों की भांति शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। समय के साथ परिवर्तन आये और स्मृतियों में स्त्रियों की शिक्षा को निषेध कर दिया गया।

प्रारम्भ में लड़कियों का भी उपनयन संस्कार होता था और उन्हें वेदों का अधययन करने की लड़कों के समान ही अनुमति होती थी।[1] उपनयन संस्कार के बाद ही विधिवत् शिक्षा का आरम्भ होता था। बाद में उपनयन संस्कार स्त्रियों के लिए बस एक औपचारिकता मात्र रह गया, वे भी गुरुओं के आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई, यज्ञोपवीत, मेखला और वल्कल धारण करती थी। अथर्ववेद में एक स्थान पर कहा गया है, 'ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर शिक्षा समाप्त करने वाली कन्याएँ योग्य पति को प्राप्त करती है।'[2]

अल्टेकर के अनुसार 'स्त्रियाँ शूद्रों की तरह वैदिक अध्ययन के अयोग्य होती है यह दृष्टिकोण बाद के युग का है। प्राचीन वैदिक काल में स्त्रियां पुरुषों के समान ही मन्त्रदृष्टा होती थी। उनमें से कुछ के नाम तो

व्याख्याता द्धहिन्दी विभागऋ, श्री नेहरू ष्टारदा पीठ द्धपी.जी.ऋ महाविद्यालय,, बीकानेर।